16700

१. श्री सद्गुरु भक्तार्थ
२. श्री सद्गुरु स्तवनावली (स्तवनादि)
२- पट्ट- पदनिर्देश
३- श्री विनयविलास
३- जीवजीव भेद संक्षेप
६- विज्ञप्ति स्तवन

* ॐ नमोगुरुभ्यः श्रीसीतारामाभ्यांनमः *

* श्रीमतेयुगलानन्यायनमः *

# श्रीसतगुरुरूपमाधुरीनखशिख

* जिसको *

श्रीअयोध्यालक्ष्मणदुर्गनिवासी श्रीमत्तरणतारण अध-
मोद्धारण निगमनेति रसरसिकाधिराज मुनिवर
श्री स्वामी श्री जानकीवरशरणजूके मुख्य
कृपापात्राधिकारी श्रीरामबल्लभाशरण
जूने सतगुरु पदसरोज मधुप
रसिकजनों के नूतननेह वर्द्ध-
नार्थ निर्माण किया।

* उसीको *

श्रीराम भगवान शरण जी ने—

मैनेजर महेशप्रसाद द्वारा, सत्यनाम प्रेस,
मैदागिन, बनारस में छपवाकर
प्रकाशित किया।

तृतीय बार १००० सम्वत १९८४

* श्रीसीतारामाय नमः *

# अथ श्रीसतगुरुरूपमाधुरी

## नखशिख।

प्रातहि सरयु निमज्जि पुनि, श्रीसतगुरु घर आउ।
पुनि निजकर लै सोहनी, सोहन भवन लगाउ ॥ १ ॥
श्रीसतगुरु पद परसकी, लगिहै उड़ि अँगधूरि।
दूरि कुटिलता तृणकरै, धरै प्रेम परि पूरि ॥ २ ॥
पुनि अति मृदुतर आसनी, आसन आश बिछाय।
युगलबिहारिणि त्रासहर, गुरुछबिलखिबिकिजाय ॥ ३ ॥
श्रीसतगुरु पद नखसुदस, दसधा भक्ति सुदेत।
युगलबिहारिणि मुग्धको, पालन करन सचेत ॥ ४ ॥
नखसुरसरि तल सरस्वती, यमुन पृष्ट पद बाल।
युगलबिहारिणीमरजिमन, लहिललिलाल निहाल ॥ ५ ॥
श्रीसतगुरुकी जानु युग, कहतजानु युग जानु।
युगलबिहारिणि युगल पद, सद बल प्रदबलवानु ॥ ६ ॥
कामकेदलि के खंभ युग, वारौं जंघ सु युग्म।
युगलबिहारिणि पुष्टतर, युगल मिलनकर सुग्म ॥ ७ ॥
श्रीसतगुरुकी कटि रटत, कटत सकल भवजार।
युगलबिहारिणि अटत मग, अटपट युगल बिहार ॥ ८ ॥
कटितट प्रीतम प्रीति पट, अचला पीत सुहाय।
चलमनअचलसुकरतध्रुव, युगल सुयशरसप्याय ॥ ९ ॥

श्रीगुरु नाभि गँभीर छबि, फबि कवि दवि मति जाय ।
युगल विहारिणि नाभि भव, शब्द अर्थ बलिजाय ॥ १० ॥
चहुँदिशि रोमावलि कलित, कला सोम छबि हीय ।
युगलबिहारिणितोमतम, गम दम दम दमनीय ॥ ११ ॥
त्रिबलीललित सुबलितबर, श्रीसतगुरु करुणेश ।
युगलबिहारिणि त्रिबिधिभजु, त्रिगुणातीत परेश ॥ १२ ॥
दरदर जनि दौरै बृथा, श्रीगुरु उदर निहारु ।
युगलबिहारिणी रामसिय, बिमल अपारुविहारु ॥ १३ ॥
श्रीगुरु उर फुर ज्ञानधुर, प्रेम प्रचुर पुरवेश ।
आतुर युगलविहारिणी, जहँ बस सुत अवधेश ॥ १४ ॥
वक्षस्थल निश्चल अमल, आयत उच्च बिशाल ।
युगलविहारिणिलाललालि, गुणगुंफितशुचिमाल ॥ १५ ॥
ग्रीव सींव छविरेख त्रय, कंठी युगल बिराज ।
युगलनाम अभिराम प्रद, बिलसतनितसजिसाज ॥ १६ ॥
भुज प्रलम्ब अवलम्ब जन, दुख कदम्ब हरिलेत ।
निजबल युगलविहारिणी, धाम बास हठिदेत ॥ १७ ॥
बाँह छाँह श्रीस्वामिगुरु, तुर फुर करि उत्साह ।
युगल विहारिणि माहमुख, दरसावहिं सियनाह ॥ १८ ॥
पहुँचा श्रीगुरुदेवकर, पहुँचावत पिय पास ।
फिरि भव में आवत नहीं, बिलसत युगलबिलास ॥ १९ ॥
नब्ज कब्ज हरिलेत जग, अन्तर्हित जियजानि ।
युलगविहारिणियुगलरँग, मिलित सब्ज परिमान ॥ २० ॥
श्रीगुरु हाथ सनाथ कर, धरैं जौन जन माथ ।
युगलविहारिणि ताहिके, रहत साथ सियनाथ ॥ २१ ॥

त्रिविधि करज हरिलेतध्रुव, श्रीगुरुकरजसुमंजु ।
युगलबिहारिणिफरज कर, मरज लरज जहिरंजु ॥ २२ ॥
श्रीगुरु कर नख लखु सुचख, रखु हिय मखु लखवार ।
युगलबिहारिणि सोम दस, मन तम तोम बिदार ॥ २३ ॥
पोर पोर पर और छबि, कहत होत बुधि बौरि ।
गौर श्याम युग गौर करि, वरी परी गुरु पौरि ॥ २४ ॥
श्रीसतगुरु अंगुष्ट युग, पुष्ट युष्ट रसराज ।
प्रीति प्रतीति बिनीत दय, तुष्ट करत महराज ॥ २५ ॥
कामादिक खल तरजनी, बरजनि विषय बिकार ।
युगलबिहारिणि अर्जनी, तर्जनि गुरु हितकार ॥ २६ ॥
श्रीगुरुकर बर मध्यमा, महल मध्य मरजाद ।
मध्यम रुचि उत्तम सुकरि, युगल बरणप्रदस्वाद ॥ २७ ॥
श्रीगुरु सुखद अनामिका, देत इनाम सुनाम ।
धामअवध आराम बिच, श्रीसिय राम मुकाम ॥ २८ ॥
श्रीगुरु स्वामि अनिष्टिका, मिष्ठ ईष्ट उपदेश ।
जग अनिष्ट तजु भजु युगल, रिष्ट सु पुष्ट हमेश ॥ २९ ॥
सामुद्रिकके गुण सुशुभ, रेख बिशेष सुदेख ।
श्रीगुरु युगलबिहारिणी, शेखी शेष परेख ॥ ३० ॥
जगमग बिच चित चलचली, जलीबलीअकुलाय ।
श्रीगुरुटिहुनी तेहिकहत, आय ठिठुकि किनजाय ॥ ३१ ॥
शिरको बोझा कंधपर, धरे कहा मति अन्ध ।
श्रीसतगुरु असकंध बल, क्यों न होत निर्बन्ध ॥ ३२ ॥
छत्तिस प्रीति बहायदै, तिरसठि अङ्ग सुप्रीति ।
मीत बिनीत प्रतीतप्रद, रीति ईति सुबिनीति ॥ ३३ ॥

पुनि सुनि नुति श्रुतिपथ चल्यो, भलो मानि विश्वास ।
बिनहित हितू विलोकि प्रन, युगल मिलन कल आस ॥ ३४ ॥
का न कहत श्रीस्वामिगुरु, का न करत हिततोर ।
का न करहु शरनद कथा, सकृत प्रणामहु चोर ॥ ३५ ॥
कानन चरित सुसरित बर, भरित हरित खिलकंज ।
युगलबिहार बिहारिणी, कथा व्यथा हर रंज ॥ ३६ ॥
श्रीगुरु बार उदार शिर, बारहिं बार पुकार ।
कहत होय हुशियार शठ, युगल मिलनकी बार ॥ ३७ ॥
श्रीसतगुरु करुणेशके, सेत केश उपदेश ।
भवनिधि सेत सुदेत सुख, नाम मिलन सीतेश ॥ ३८ ॥
श्रीगुरुशिखासिखावनित, सुनहु शिष्यसदबात ।
शवरी किय कबरी मनी, श्रीरघुबर विख्यात ॥ ३९ ॥
इश्क शहरकी डहर अति, कहर मिहर पहुँचाय ।
छहरिछटा अँग २ रही, श्रीगुरु कही न जाय ॥ ४० ॥
भाल विशाल कृपाल गुरु, शोभित ललितललाम ।
कसरि हरत रँग केशरी, सीता राम सुनाम ॥ ४१ ॥
युगल सुरेख सुदेख दृग, त्यागि निमेष विशेष ।
मध्य सु श्रीयुत चंद्रिका, विन्दु अनन्द परेख ॥ ४२ ॥
राम लषण मनुबन्धु युग, दुहुँदिशि रहे बिराज ।
बीच मीच हर श्रीसिया, चन्द्र विन्दु सजिसाज ॥ ४३ ॥
मोंह सोंह जेहि होयँ गुरु, कौन करै तेहि द्रोह ।
मोह कोह हरिछोह करि, कृपानन्द सन्दोह ॥ ४४ ॥
नैन सैन हर मैन कर, सीताराम सुअयन ।
श्यामगौर मुद दैन लखु, अरुन चैल चितचयन ॥ ४५ ॥

श्रीगुरुचितवनिकिमिकहौं, हितवनि मितवनिमीत ।
वितवनि युगलविहारिणी, भीत अनीत कुरीत ॥ ४६ ॥
चाह चश्म चश्मा लगा, लखैं सुछबि सियनाह ।
श्रीगुरुयुगलविहारिणी, मुद निधि उमँग अथाह ॥ ४७ ॥
रसिकसुजनकर मीनमन, जानत अतिरसभ्कीन ।
युगलविहारिणिलीनसुख, श्रीसतगुरु आधीन ॥ ४८ ॥
श्रीसतगुरुकी नाक कह, नाकलोक शतशोक ।
तजुभजुयुगलबिहारिणी, मनधन बिगस अशोक ॥ ४९ ॥
श्रीसिय पिय सौगंध गुण, स्वादलेत आजाद ।
स्वास २ मधि बास लहि, खासयुगलबरनाद ॥ ५० ॥
पलक २ में स्वामि गुरु, खलक सुकरत निहाल ।
युगलझलकछलकत छटा, ललकत लखि लखि लाल ॥ ५१ ॥
श्रीगुरुसुखद कृपालुकी, मोंछ देत पद मोक्ष ।
निरखे युगलबिहारिणी, भ्रम श्रम क्रम तजु ओछ ॥ ५२ ॥
श्रीसतगुरु करुणायतन, बदन सदन सियराम ।
नामसु युगल बिहारिणी, बिलसत आठहुयाम ॥ ५३ ॥
मुखन मध्य में मुख्यमुख, श्रीगुरुकृपानिकेत ।
दुख हरि युगल बिहारिणी, नामरटनि सुखदेत ॥ ५४ ॥
नव षट चार अठारहौं, सबही कर जो सार ।
श्री शृङ्गार उपासना, बदत युगल सरकार ॥ ५५ ॥
श्रीजानकिवर प्रेम घर, लहत सुयुगल प्रसाद ।
कहत रहत उपदेश नित, युगलबिहारिणिस्वाद ॥ ५६ ॥
रदन मदन मद कदन लखु, अदनसुकारणबीज ।
सदनयुगलछबि बीचरखि, देत श्रीगुरु फुर बीज ॥ ५७ ॥

ललीलाल लालीललित, पान मन्द मुसुक्यानि ।
श्रीगुरु युगलबिहारिणी, जान जियावनि बानि ॥ ५८ ॥
रसि २ रसना लेत रस, नाम सु श्रीरसिकेश ।
युगलबिहारिणि के सुखद, श्रीसतगुरु करुणेश ॥ ५९ ॥
श्रीगुरु रसना अस कहत, असना अवसर फेर ।
कटि कसना बसना अवध, युगल मिलन की बेर ॥ ६० ॥
श्रीगुरु अधरसु कहत फुर, धरु धीरज हिय माह ।
श्रीधनुशरधर अवसरहिं, युगलसुमिलन उछाह ॥ ६१ ॥
हँसनिचित्तबरबसफँसनि, नशनि सु बिधि परपंच ।
लसनि स्वामि गुरुदेव ढिग, बसनि प्रेमवर मंच ॥ ६२ ॥
सबदिशि तें दृगफेरि कै, निरखहु श्रीगुरु ओंठ ।
नोट लेहु पिय पासकी, जगत दिखावहु लोंठ ॥ ६३ ॥
सुनहु श्रवण मनमें गुनहु, श्रीगुरु बोल अमोल ।
लोल सुचित्त अलोलकरि, निरखहु गोल कपोल ॥ ६४ ॥
श्रीगुरु चिबुक सुहावनी, छबि छावनी अनूप ।
युगलप्रेमकर कूप यह, हरण त्रिबिधि भवधूप ॥ ६५ ॥
डाढ़ी मृदु बाढ़ी रुचिर, श्रीगुरु स्वकर सुधार ।
जग खाढ़ी काढ़ी सुछबि, ठाढ़ी रही निहार ॥ ६६ ॥
ककही कही न जात कछु, कहि बिनु रही न जाय ।
युगलविहारिणि स्वामि गुरु, बार २ बलिजाय ॥ ६७ ॥
अतर सुतरकर स्वकर गुरु, अग्रभाग दिय ग्रंथि ।
जड़चेतन की ग्रंथि जहि, लियो ग्रंथि मनग्रन्थि ॥ ६८ ॥
चौरासौ लख योनिभ्रम, थक्यो न यह मनभूत ।
श्रीसतगुरु बिनहित हितू, बांधिलियो मजबूत ॥ ६९ ॥

प्रबल श्रिगुरु मनसबलको, बस्त्र शस्त्र मधिराखि ।
अबलसुयुगल बिहारिणी, तुष्ट कृपामृत चाखि ॥ ७० ॥
जो तू युगलबिहारिणी, चाहसि युगल बिहार ।
तौ तू श्रीसतगुरु सुपद, अमद विसद हियधार ॥ ७१ ॥
जेहि सुबास बस आपश्री, जानकि बल्लभ खास ।
युगलबिहारिणिपासनित, बने रहत रस रास ॥ ७२ ॥
यथा मीन गति लीनजल, रहत जलहि आधीन ।
तथा सु युगलबिहारिणी, कथा व्यथा कालीन ॥ ७३ ॥
को जानै सतगुरु बिना, युगलबिहारिणि भेद ।
भेद खेद बिनशै नहीं, बिनु गुरु कह चहुंवेद ॥ ७४ ॥
बेद बिदित बिरदावली, बाँकी खाँची रेख ।
युगलबिहारिणि रेख बिधि, मेख देत दृग पेख ॥ ७५ ॥
कहँ तू कह लोगवा तुम्हैं, कहत सुहीय बिचारु ।
तनमन युगलबिहारिणी, धन प्रन गुरु परवारु ॥ ७६ ॥
श्रीगुरु बचनामृत श्रवण, सुनिये मन चित लाय ।
युगलबिहारिणि रामसिय, युगल केलि कलपाय ॥ ७७ ॥
श्रीगुरु मूरति माधुरी, नख सिख रहित विकार ।
युगलबिहारिणि गुरुकृपा, पावत निरखन हार ॥ ७८ ॥
निगमअगम आनन्दबिच, रहत सदा लयलीन ।
युगलबिहारिणि बिलग नहिं, होत यथा जलमीन ॥ ७९ ॥
नयन अयन बिहरत रहत, सियपिय सुखमाकन्द ।
युगलबिहारिणि सो लहत, जेहिगुरु होहिंपसन्द ॥ ८० ॥
जेहि करुणा यह मनुजतन, दीन्हों अवध सुबास ।
युगलबिहारिणि तेहिकृपा,दीजै युगल बिलास ॥ ८१ ॥

युगलबिहारिणि सँगकबहुं, करिहैं युगलबिलास।
फरिहैं बिपिनमनोरथहिं, लखि सिय पिय रसरास ॥ ८२ ॥
युगलबिहारिणि सँग कबहुं, करिहैंयुगलबिहार।
हरिहैं यह भव भार दुख, धरिहैं कर शिर प्यार ॥ ८३ ॥
मरिहैं भ्रू धनु नैन शर, चितवनि भाव समेत।
युगलबिहारिणि बिलसिहैं, सियपिय कृपानिकेत ॥ ८४ ॥
पुनिशिर धुनिहैं नाहिं यह, सुनिहैं चरित तुम्हार।
गुनिहैं पियगुणहीयनिज, युगल बिहार अपार ॥ ८५ ॥
श्रीगुरु पदरज अंजनहिं, रंजन हिय दृग लाव।
स्वामि निरंजन रामसिय, युगलबिहारिणि पाव ॥ ८६ ॥
यहि जग मग ठग सकल हैं, कीन्ही खूब बिचार।
सम श्रीगुरु महबूब प्रद, युगलबिहारिणि प्यार ॥ ८७ ॥
श्रीगुरु पद नख चख चमक, उठे एकहू बार।
युगलबिहारिणि ताहिको, बिन प्रयास निस्तार ॥ ८८ ॥
मन से मनन सु कीजिये, श्री सतगुरु उपदेश।
युगलबिहारिणि क्लेश हर, मिलिहैं सुत अवधेश ॥ ८९ ॥
खिलिहैं हिय पंकज कली, ललीलाल छबिहेरि।
अली सुयुगल बिहारिणी, भली कहत यह टेरि ॥ ९० ॥
श्री मिथिला श्री अवधको, संबन्धहिं कब योग।
युगलबिहारिणि तोहिं दियो, श्री सतगुरु हर सोग ॥ ९१ ॥
दिव्य सहस्र सु वर्ष लगि, शंकर कीन्हो ध्यान।
युगलबिहारिणि राम गुरु, प्रगटि दियो तब ज्ञान ॥ ९२ ॥
जानकि अस्तव राज में, देखिय मनकरि प्रीति।
युगलबिहारिणि है वही, श्री सतगुरु की रीति ॥ ९३ ॥

श्री सिय स्वामिनि सहचरी, देत सु करि सम्बन्ध।
युगलबिहारिणि गुरु कृपा, मिटत अन्ध जगधन्ध॥ ९४ ॥
श्रीसीतापति गतिद हैं, अगतिन गति बहु दीन।
युगलबिहारिणि समुझ मन, सोउ सतगुरु आधीन॥ ९५ ॥
युगलबिहारिणि जो बिक्यो, श्री सतगुरु के हाथ।
हाट हाट सो नहिं बिक्यो, मिलैं ताहि सियनाथ॥ ९६ ॥
रे रे मन अवसर मिल्यो, अब तू नाहिंन चूक।
युगलबिहारिणि स्वामि गुरु, भजु जग आशा थूक॥ ९७ ॥
मातु पिता सुतबित त्रिया, भे जग बारम्बार।
श्रीसतगुरु करुणेशबिनु, मिल्यो न युगल बिहार॥ ९८ ॥
सो श्रीगुरु समरथ मिल्यो, अब अनरथजगत्याग।
युगलबिहारिणि मोह निशि, जनिसोवै उठुजाग॥ ९९ ॥
लागु चरण गुरुदेव के, शिर धरि अरि बर माँसु।
युगलबिहारिणि राम सिय, नाम महारस पागु॥ १०० ॥
करसों कर श्रीगुरु महल, टहल दहल हरणीय।
युगलबिहारिणि सहल में, मिलिहैं तोहिं सियपीय॥ १०१ ॥
सत दोहा गुरु असतहर, सतत सतक करि पाठ।
फँसत अंग छबि रस रसत, बसत नसत ढिग आठ॥१०२॥
श्रीगुरु कृपा सुवारि लहि, हरित हो सूखो काठ।
आश्रय युगल विहारिणी, श्रय सुखसद प्रद ठाठ॥ १०३ ॥
याचत युगल बिहारिणी, बार बार हितकार।
श्रीसतगुरु बिन हित हितू, बेगहि करहु सँभार॥१०४॥
आश्रम श्रीगुरुदेव कर, श्रम भ्रम हरण हमेश।
बरण श्रीजानकिबर शरण, परन ररन सीतेश॥१०५॥

स्थूल सूक्ष्म कारण त्रिगुण, धुनत भुनत नितशीश।
सुनतहिं युगलविहारिणी, गति तुरीय प्रद ईश ॥१०६॥
रहै संग सेवा लहै, कहै मनोहर नाम।
चहै चरित बित चावसे, बहै दहै नहिं बाम ॥१०७॥
बिधि प्रपंच अंचै नहीं, बंचै नहीं कुबाम।
संचे युगलबिहारिणी, सिय पिय नाम ललाम ॥१०८॥
श्रीसिय जन्मनिवास यह, माधव मास प्रकाश।
श्याम पक्ष सातैं सुतिथि, मंगल दिन पुरआश ॥१०९॥
बैयाकरण सुतत्व बर, इंद्री मनहिं समेत।
संवत् युगलबिहारिणी, गुरु नख शिख सुखदेत ॥११०॥

इतिश्री सतगुरुरूप माधुरी ग्रन्थ सम्पूर्णम् शुभम्।

## ॥ लावनी ॥

श्रीसतगुरु दीनदयालु प्रणत हितकारी। बिगरी मम जन्म अनेककी लेहु सँभारी ॥ यह नरतन रतनहिं जात बिना प्रिय नामै ॥ कैसे करि मोको मिलै नाथ अभिरामै। निरहेतु की कृपाकटाक्ष करिय सुख धामै ॥ चिंतौ चित हित प्रद चरित प्रभो वसुयामै ॥ बिरदावलि पतित पुनीत सुदृगन निहारी। बिगरी मम जन्म अनेककी लेहु सँभारी ॥ १ ॥ त्रिभुवनकी सम्पति एकस्वास सम नाहीं। सो स्वासा श्रीसीताराम नाम बिनु जाहीं ॥ अति बिपति हमारी पेखि गहो प्रभुबाहीं। शरणागत आरति हरण परण तव आहीं ॥ हे अन्तरज्ञ सर्वज्ञ स्वामि सुखकारी ॥ बिगरी मम० ॥२॥ जगमे मैं ठग सगरे भरे नहीं सग कोई। सबहीं बिधि अब हम नैन आपने जोई ॥ यह सुर दुर्लभ तनु पाय हाय वय खोई। अब चरण शरण तव आय कहूँ प्रभु रोई ॥ अस कीजै कृपा कृपालु मिलैं धनु धारी। बिगरी मम० ॥ ३ ॥ श्रीअवधवासदिय खास राम रजधानी। जहँ बासी महिमा आप श्रीराम बखानी ॥ अरज़ी गरज़ी को श्रवण सुनहु मुददानी। सियनाह मिलन उत्साह चाह जियजानी ॥ हे श्रीरामवल्लभाशरण भरोसा भारी। बिगरी मम जन्म अनेककी लेहु संभारी ॥ ४ ॥